International Journal of Enhanced Research in Management & Computer Applications, ISSN: 2319-7471
Vol. 2 Issue 8, August-2013, pp: (8-13), Available online at: www.erpublications.com

भारत में मध्यकालीन शासकों की भूमि व भू–राजस्व व्यवस्थाः एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. दिलीप पीपाड़ा

प्राध्यापक अर्थशास्त्र विभाग, सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय महाविद्यालय नाथद्वारा (राज.)

सांराशः–

भारत में मध्यकाल के दौरान गुलामवंश, सल्तनतकाल, अलाउद्दीन खिलजी, तुगलकवंश, मुगलवंश, अकबर, शिवाजी आदि के सहित अनेकों राजाओं का शासन रहा है। प्रत्येक के शासनकाल में भू–राजस्व व्यवस्था तात्कालिन परिस्थितियों व शासन की आवश्यकता के अनुसार निर्धारित होती रही है। इनमें से कुछ शासकों के द्वारा अपने हिसाब से भूमि की पैमाईश व कर व्यवस्था लागू की तो किसी ने पूर्व शासक की नीति का ही अनुसरण किया था। इन सभी शासकों में अल्लाउददीन खिलजी एक ऐसा शासक था जिसने भू–राजस्व के एकत्रीकरण के लिए किसानों पर बहुत ही कडाई की जब कि अन्य शासकों के द्वारा भू–राजस्व को वसूलने में लचीला रूख अपनाया था। यही कारण है कि किसी शासक के शासनकाल में किसानों की आर्थिक स्थिति ठीक रही है तो किसी के शासनकाल में बहुत ही दयनीय रही है।

मुख्य बिन्दूः– मध्यकाल, भू–राजस्व व्यवस्था, मूगल, हिन्दू, गुलामवंश ,सल्तनतकाल अलाउद्दीन खिलजी, तुगलक वंश,शेरशाह सूरी, अकबर, शिवाजी, भूमि की पैमाईश, खूत, मुकद्म, मुखिया, जजिया, खिराज, गृहकर, चराई कर इत्यादि।

मध्यकाल में भारत का वैभव अपने चरम पर था। देश की आर्थिक स्थिति का आलम यह था कि इस देश को सोने की चिडियां के नाम से जाना जाता था। देश की इस अपार समृद्धि के कारण देश पर कई आक्रमणकारियों के द्वारा देश की सम्पति को लुटने के लिए आक्रमण तक किये गये थे। इतिहास के पन्ने पलटे तो हमें ज्ञात होता है कि महमूद गजनवी ने हमारे यहा पर 17 बार आक्रमण किये एवं अकुत धन उसने देश से लुटा। उसके बाद मोहम्मद गौरी ने भी देश की अपार धन संपदा के लालच में इस देश पर आक्रमण किया था। तात्कालीन समय में बार–बार होने वाले आक्रमणों के कारण देश की कृषि, उधोग, व्यापार, वाणिज्य, व सामान्य जनजीवन को गहरा आधात लगा था एवं देश की अर्थव्यवस्था अस्तव्यस्त हो गयी थी। विभिन्न राजाओं के मध्य होने वाले युद्ध व बाहरी आक्रांताओं के द्वारा किये जाने वाले लगातार आक्रमणों के कारण देश की उत्पादन क्षमता को काफी नुकसान उठाना पडा था।

उस समय देश पर जो राजा शासन कर रहे थे उनका भी जीवन बहुत अधिक विलासिता पूर्ण था। वे अपनी शान शौकत पर काफी रूपया खर्च करते थे उनके दरबार बहुत ही वैभवशाली होते थे।अपनी आवश्यकताओ को पूरा करने के लिए वे जनता पर कर लगाते थे। तात्कालीन समय में मुहम्मद तुगलक अपनी सनक के चलते अनेकों ऐसी योजनाएं चलायी गयी जिससे जनता पर उसका बहुत आर्थिक भार पडा यही कारण है कि आज भी कोई बेकार का आदेश निकालता है। तो उसे व्यगं में तुगलकी फरमान कहा जाता है। इसी प्रकार अलाउद्दीन की सेनिक नीति, तैमुर के द्वारा की गयी देश में भयानक लुटपाट व सैयद व लोदी सुल्तानो के

द्वारा आर्थिक उन्नति की उपेक्षा आदि कई इस प्रकार की घटनाये थी जो उस समय की खराब स्थिति को दर्शाति है।

उस समय शासन की आय का सबसे बडा स्त्रोत भूमि पर लगने वाला कर होता था जिसे की लगान के रूप में जाना जाता है। मध्यकाल में अलग–अलग शासकों के द्वारा भू–राजस्व व्यवस्था अपने–अपने अनुसार व उनके शासन की आवश्यकता के अनुसार निर्धारित की जाती थी। परन्तु कुछ शासकों के द्वारा अपनी विस्तारकारी नीतियों व अन्य कारणों के कारण से जनता से अधिक भू–राजस्व वसूला जाता था इस कारण से उस समय की जनता काफी हद तक इस प्रकार की नीतियों से परेशान हो जाती थी। प्रस्तुत अध्ययन में हम मध्यकाल के लगभग सभी शासकों के द्वारा जो भू–राजस्व की नीति अपनायी गयी थी उसको संक्षिप्त में समझने का प्रयास करेगें।

गुलामवंशः–

गुलामवंश के शासकों के द्वारा भूमि कर व भू व्यवस्था में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नही किया गया प्रायः उस समय राजपूत राजाओं के द्वारा जो भू–राजस्व व्यवस्था उपना रखी थी क्रमोबेश उनके द्वारा उसी व्यवस्था को जारी रखा गया था। केवल कुछ ही परिर्वतन उनके द्वारा किये गये थे। इस काल में जनसंख्या की वृद्धि के चलते कृषि कार्य का विस्तार करने का प्रयास किया गया था। इस हेतु उन्होंने दो–आब भूमि व जगलों को साफ करके उस भूमि को कृषि योग्य बनाने का प्रयास किया था। उस समय भूमि पर हिन्दूओं से जो कर लिया जाता था उसे खराज कहा जाता था जिसकी दर हिन्दू युग के राजस्व लेखे के अनुसार निर्धारित थी। इसी प्रकार से भूमि पर कर जो कि मुसलमानों से लिया जाता था उसे उश्र कहा जाता था इस प्रकार के कर की दर प्रायः कम होती थी। इनकी भू– राजस्व व्यवस्था करने वाले विभाग को दीवान –ए–कोही व अमीर–उल–अमीरा कहा जाता था।

सल्तनत कालः–

इस काल में खेती के लिए पर्याप्त भूमि उपलब्ध थी। साधारणतया किसानों के खेती के बदले लगान(कर) देना होता था परन्तु ग्रामीण क्षैत्र में कुछ उच्च वर्ग के लोग थे जिनको कर नही देना होता था।इन्हे खूत, मुकद्म, और मुखिया के नाम से जाना जाता था। इनको जजिया, खिराज, गृहकर, चराई कर नही देना होता था। इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षैत्र में एक अभिजात वर्ग भी कर से मुक्त था इसमें राणा, राय,ठाकुर (सांमत) आदि लोग आते थे इनकी गिनती मुकदम से उपर होती थी। बाद में इन्ही अभिजात वर्ग को जमींदार के नाम से जाना जाने लगा।

सल्तनत काल में भूमि को स्वामित्व के आधार पर मुख्य रूप से 4 भागों में बांटा गया था। इनमें मदद–ए–माश वह भूमि होती थी जिसको शासक के द्वारा ईनाम में दिया गया हो। इस प्रकार की भूमि पर कोई कर नही लगता था। इसके अतिरिक्त अमीरों को वेतन के बदले जो भूमि दी जाती थी उसे अत्ता कहा जाता था ये भूमि भी कर रहित होती थी। भूमि का तीसरा प्रकार कृषि योग्य भूमि था जिस पर कर वसूल किया जाता था। इसके अतिरिक्त खालसा भूमि वह भूमि होती थी जिस पर शासन का अधिकार होता था इससे प्राप्त उपज से सेना का वेतन व अन्य शासन के खर्च निकाले जाते थे।

अलाउद्दीन खिलजीः–

सल्तनत काल में अन्य सभी मुस्लिम शासको के द्वारा प्रायः भूमि के बारे में पहले से चली आ रही व्यवस्था को स्वीकार कर लिया था परन्तु इस काल ही के शासक अलाउद्दीन खिलजी ने राज्य की आय में वृद्धि, लोगों को आर्थिक अभाव में रखने,सूबेदारों(किसानों से भू–राजस्व वसूल करने वाले) का दमन करने व मंगोलों के आक्रमण से शासन की रक्षा के लिए बडी सेना रखने के लिए भू–राजस्व व्यवस्था में काफी परिवर्तन किये थे। उसने इसके लिए दान,पुरूस्कार, पेंशन, जागीर में प्राप्त भूमि को जब्त कर खालसा भूमि में शामिल कर लिया था। इसके अलावा उसने राजस्व अधिकारियों को मिलने वाली सुविधाओं को समाप्त कर दिया तथा भुमि की

पैमाइश और भूमि कर का निर्धारण नये सिरे से करकर भूमि पर लिये जाने वाले कर को 1/2 भाग कर दिया व इसे नकद में देने का प्रावधान बना दिया। इसके अलावा उसके समय पर राजस्व व अन्न भण्डार का रिकार्ड रखा जाने लगा। भूमि पर कर वसूलने में बहूत ही निमर्मता बरती जाने लगी किसी कर्मचारी के द्वारा किसी भी प्रकार का कोई बेईमानी की जाती थी तो उसे कठोर दण्ड दिया जाता था।

खिलजी के इस प्रकार के भूमि संबधी उपायों के कारण शासक का खजाना नकदी व अन्न के भण्डार से भर गया था। उस समय में उपज का आधा भाग भू–राजस्व होने के कारण किसानों के पास स्वयं के जीवनयापन योग्य अनाज भी नही बच पाता था इस कारण से जीवनयापन के लिए हिन्दूओं की महिलाओं का मुस्लिमों के यहा सेविका के रूप में काम करने जाना पडता था। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि अलाउद्दीन खिलजी की भू–राजस्व व्यवस्था के कारण हिन्दू किसानों का काफी शोषण होने लगा व उनको बहुत अधिक काम करने के बाद भी भरपेट भोजन नही मिल पाता था।

तुगलक शासको की भू–राजस्व व्यवस्थाः–

अलाउद्दीन खिलजी की भू–राजस्व नीति अप्रिय होने के कारण उसके बाद वाले उत्तराधिकारियों ने उसका अनूसरण नही किया एवं उसकी भूराजस्व नीति उसके शासन की समाप्ति के साथ ही समाप्त हो गयी परन्तु भूमि पर लिये जाने वाले लगान की मात्रा 1/2 ही रही। उसके बाद तुगलकवंश के शासक ग्यासूदीन तुगलक ने खुत, मुकदम, चौधरियों की भूमि व चरागाह भूमि को कर से मुक्त कर दिया तथा सैनिकों व असैनिकों का जागीरे देना वापस प्रारम्भ कर दिया। उसके समय भूमि का समस्त कार्य दीवान ए वजारत विभाग के अधीन किया जाता था।

ग्यासूदीन के बाद उसके पुत्र मुहम्मद तुगलक ने राज्य का तेजी से विकास किया इस कारण उसने उसे सम्भालने की दृष्टि से भू–राजस्व नीति में कुछ परिवर्तन किया। उसने राजस्व नीति को प्रान्तों व दोआब दो भागों में बांट दिया। इसमें उसने प्रान्त के राजस्व को ठेके के आधार पर अधिकारियों को दे दिया जब कि दोआब का भूराजस्व शासन के अधिकरियों के द्वारा एकत्र किया जाता था। इसके लिए गांव स्तर पर विभिन्न मुखिया बनाये गये जोकि भू–राजस्व एकत्र करके उसे राजकोष में जमा कराते थे। इस हेतु उसने जो विभाग बनाया उसे तारीख–ए–फिरोजशाही के नाम से जाना जाता था।

उसके द्वारा दोआब खिराज कर की कर की दर को 10 से 20 गुना तक बढा दिया गया था। इस दोआब में रहने वाली ज्यादातर प्रजा हिन्दू थी जिसे वह अधिक कर लेकर गरीब बनाना चाहता था ताकि उनकी और से कभी उसे विद्रोह करने का भय नही रहे। परन्तु उसी समय पर अकाल पडने के कारण किसानों की क्षमता इतने कर को चुका पाने की नही रही इसका असर यह हुआ कि जिनके पास सम्पति थी वह उसके विद्रोही हो गये व किसान खेती करने के स्थान पर विरोध में जंगल में चले गये। किसानों के इस विद्रोह को उसने बहुत की निर्ममता से कुचलने का प्रयास किया जिसके चलते अधिकांश हिन्दू सुल्तान के विरोधी हो गये। उसके द्वारा दीवान–ए–काही नामक कृषि विभाग की स्थापना भी तात्कालीन समय में हिन्दू किसानों का शान्त करने के लिए की गयी जिसके माध्यम से किसानों के खेत में सुधारात्मक कार्य किये गये व उन्हे ऋण उपलब्ध कराये गये।

फिरोजशाह तुगलक की भू–राजस्व नीतिः–

मुहम्मद तुगलक की मृत्यु के बाद उसका उत्तराधिकारी फिरोजशाह तुगलक गददी पर बेठा उसने जगह–जगह हिन्दूओं के द्वारा किये जा रहे विरोध को देखते हुए दो–आब की नीति में परिवर्तन कर जनता को राहत देने का प्रयास किया। उसने कृषकों के हित को ध्यान में रखते हुए बकाया कर वसुलने की नीति को सरल कर दिया, दरबार में अधिकारियों के द्वारा मंहगे उपहार देने पर उनका मुल्याकन करना प्रारम्भ किया की कही यह अधिकारी गरीबों का शोषण करके तो ऐसा नही कर रहा है, उसने कर वसूल करने वाले अधिकारियों को किसानों से नम्र व्यवहार करने की हिदायत दी, किसानों का विश्वास बहाल करने के लिए उनको दिये गये

तकाबी ऋण माफ कर दिये, पदाधिकारियों का वेतन बढाया गया, भूराजस्व को उपज का 40 प्रतिशत निर्धारित कर दिया गया,किसानों को अच्छे खाद व बीज उपलब्ध कराये गये।

इस प्रकार से फिरोजशाह तुगलक के द्वारा किसानों की स्थिति सुधारने व शासन में उनका विश्वास बनाये रखने के लिए काफी प्रयास किये गये थे। इसके परिणाम के संदर्भ में प्रसिद्ध विचारक अफीफ ने लिखा है 'फिरोज के शासनकाल में कृषक इतने आबाद एवं समृद्धिशाली हो गये थे कि उनके गृहो में सोने–चांदि और खाने–पीने की वस्तुओं का अभाव नही थ,जीवन की आवश्यक वस्तुऍ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थी'।

इसी प्रकार एक और विचारक डोमिगोस पेइज तात्कालिन समय के विजयनगर नगर के लिए लिखा हे'संसार में यह सबसे सम्पन्न नगर है,और यहा चावल,गेहूँ,आदि अनाज भरे पडे है भारत में अन्न जो, मटर, मूगं, मटर ,दालें चना आदि खूब उत्पन्न होते है नगर में इनके बडे–बडे भण्डार होते है और बिकते भी बहुत सस्ते है ' इससे स्पष्ट है उनके समय उनके द्वारा किये गये सुधार कार्यो से किसानों की स्थिति में काफी सुधार हुआ था।

शेरशाह सूरीः–

इनके द्वारा अपनायी गयी लगान व्यवस्था सल्तनत काल से कही अच्छी थी उसके शासनकाल में भूमि को तीन प्रकारो में बांटा हुआ था तीनो प्रकार की भूमि पर होने वाली उपज का आंकलन कर उसका औसत ज्ञात किया जाता थाएव कर का निर्धारण करते समय भूमि के प्रकार को ध्यान में रखा जाता था। प्रायः लगान पैदावार का 1/3 भाग लिया जाता था। उस समय भूमि पर खेती के लिए बंटाई, नस्क या कनकृत व नकदी या जब्ती(जमई) प्रथा विधामान थी इन प्रथाओं के भी अनेक उपप्रकार थे। किसानों से लगान के अतिरिक्त जरीवाला, महासिलाना भी लिया जाता था जो 2.5 से 5 प्रतिशत तक होता था यह एक प्रकार से लगान एकत्रीकरण की फीस हुआ करती थीं। इसके अलावा भी किसानों से 2.5 प्रतिशत राशि और वसूल की जाती थी जिसका प्रयोग किसानो को अकाल व सूखे के दौरान सहायता करने में किया जाता था। उसके समय में भूमि की पैमायश करवा कर लगान का निर्धारण किया जाता था तथा किसानों को लगान नकद या फसल के रूप में जमा कराने की छूट थी सैनिकों व अधिकारियों को किसानों को किसी प्रकार का नुकसान नही पहुँचाने का आदेश दिया हुआ था किसान बिचोलियों से बचने के लिए सीधा राजकोष में भी लगान जमा करा सकते थे। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि यद्धपि उस समय लगान की दर कुछ अधिक थी परन्तु किसानों को परेशान नही किया जाता था।

मुगलकाल में भू–राजस्व व्यवस्थाः– अकबर के शासन से पूर्व मुगलकाल में प्रायः भू–राजस्व व्यवस्था सही नही थी इस कारण शासन में चारों और विद्रोह व अशान्ति का वातावरण था। उस समय अधिकतर भूमि बडे–बडे जमीदारों व सरदारों के पास थी। वे किसानों से अधिक लगान वसूल करते व उसका थोडा भाग राजकोष में जमा करवादेते थे बाकी भाग उनके द्वारा स्वयं रख लिया जाता था। इस प्रकार की व्यवस्था में किसानों से काफी अधिक मात्रा में लगान वसूल कर लिया जाता था पर राजकोष में कम मात्रा में ही कर जमा होता था। उस समय किसानों की हालत आर्थिक रूप से काफी खराब थी यहा तक की किसानों को यह तक पता नही होता था कि उनके पास भूमि की कितनी मात्रा है। अकबर के शासन के दौरान इसमें काफी सुधार के प्रयास किये उन्होंने 1563 में एन्याद खां को खालसा भू–भागों के लिए किरोडी नियुक्त किया था जिनकों इससे 1 करोड प्रतिवर्ष आय देनी थी परन्तु उसकी यह व्यवस्था सफल नही रही,1566 में उसने मुजफर खां को दीवान व टोडरमल को सहायक नियुक्त करके भूमि की जमाबंदी तैयार करवायी उसके बाद भी अकबर के द्वारा 1569–1580 तक भूमि के संदर्भ में अनेकों प्रयोग कर किसानों को सहायता प्रदान करने के साथ राजकोष में वृद्धि के प्रयास किये थे।

अकबर के द्वारा किये गये प्रयासों में भूमि की पैमायश, भूमि का वर्गीकरण,मालगुजारी कर के नकद में देने की व्यवस्था, कर में सरकारी आय निश्चित करना,भूमि के लिए विशेष अधिकारियों की नियुक्ति करना, सूखे व

अकाल की स्थिति में किसानों को लगान से मुक्ति प्रदान करना,रेयतबाडी बंदोबस्त आदि प्रमुख है हांलाकि अकबर के शासन काल में भूकरों की दर कुछ अधिक थी पर किसानों व शासन के बीच बिचौलियों को उसने समाप्त कर दिया था इस कारण किसानों की जेब से लगान के अतिरिक्त राशि नही लगती थी।

शिवाजी की भू–राजस्व व्यवस्था

शिवाजी ने जागीर प्रथा को बंद कर दिया परन्तु उनके शासनकाल में भी कर का निर्धारण टोडरमल की व्यवस्था के अनुसार ही होता था। उनके समय में अन्नाजी दत्तो ने भूमि की पैमाईश व भूमि की श्रेणी का निर्धारण किया था ताकि उसके अनूसार लगान की वसूली की जा सके। उन्होंने लगान के एकत्रीकरण के लिए अधिकारियों की नियुक्ति की पर इस बात का ध्यान रखा की इनके द्वारा किसानों का शोषण नही किया जाये।उस समय अकाल व सुखे की स्थिति में किसानों का लगान माफ किया जाता था। उनके राज्य की आय कम थी इस लिए वे पास के राज्यों के राजाओं से या सांमन्तों से लगान का चौथा भाग वसूल करते थें इसके लिए वे उस शासन को आक्रमण कर स्वयं के राज्य में नही मिलाने का आश्वासन देते थे।

उपसंहारः–

उपरोक्त आधार पर यह कहा जा सकता हैकि मध्यकाल में भू–राजस्व व्यवस्था शासको के अपने–अपने अनुसार परिवर्तित होती थी। कुछ शासकों के द्वारा इस व्यवस्था में कोई भी परिर्वतन नही किया गया जब कि कुछ शासकों के द्वारा इसमें अपने राज्य की आवश्यकता के अनुसार परिर्वतन किया गया था। उस समय शेरशाह सूरी, अकबर, शिवाजी,आदि शासकों के द्वारा इसमें व्यापक परिर्वतन करके ना केवल शासन की आय को बढाया गया वरन किसानों की समस्याओं का भी समाधान कर उनका विश्वास जीतने का प्रयास किया गया था। अकाल व सुखे कि स्थिति में किसानों का लगान माफ करना किसानों को कृषि में सुधार करने के लिए शासन के माध्यम से ऋण उपलब्ध करवाना आदि ऐसे सुधार थे जो आज भी प्रचलन में है संक्षिप्त में यह कहा जा सकता है कि अलाउददीन खिलजी के समय किसानों की आर्थिक स्थिति काफी खराब थी बाकी समय में किसानों की स्थिति में उतार चढाव होता रहा था।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

[1]. 1453: The Holy War for Constantinople and the Clash of Islam and the Wesat by Roger Crowley
[2]. A Textbook of Medieval Indian History by SAILENDRA NATH SEN
[3]. Madhykalin bharat ka itihas (1200-1761AD) Book 2020
[4]. Hindi Edition by SHARMA VYAS, Kalu ram Sharma , Prakash Vyas
[5]. Madhykalin Bharat Ka Itihas 2013 by Dr. Mohanlal Gupta
[6]. Bharat ka Prachin Itihas by Ram Sharan Sharma
[7]. Madhyakalin Bharat Ka Itihas (Sangh Evam Rajya Lok Sewa Ayog Dwara Ayojit Mukhya Parikshaon Hetu)
[8]. Madhyakalin Bharat Ka Brihatt Itihas-1 by J. L. Mehta (Author)
[9]. A World Lit Only by Fire: The Medieval Mind and the Renaissance: Portrait of an Age by William Manchesater
[10]. The History of the Medieval World: From the Conversion of Constantine to the First Crusade by Susan Wise Bauer
[11]. History of Medieval India – Ishwar Prasad and I.F. Rush brook William.
[12]. Advanced Study in the History of Medieval India (1000-1526 A.D) – J. L. Mehta
[13]. The Mughal Empire (1526-1803 A.D) – Ashirwad Lal Shrivastava, Fifth edition 1966.
[14]. Historical Dictionary of Medieval India – Iqtidar Alam Khan
[15]. India: Medieval History – Roma Chatterjee
[16]. History of Medieval India (800- 1700): Satish Chandra
[17]. History of Medieval India by Mahajan's. Chand Publishing, 2007